उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

दिगंत- भाग-2- काव्य खण्ड

शीर्षक - छप्पय

कवि - नाभादास

डॉ० देव चरण प्रस
एसो० प्रो० हि
रा० ऊ० सं० महा वि० दुमका
15/06/2021

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न - नाभादास ने छप्पय में कबीर की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर :- भक्त कवि नाभादास ने अपने 'छप्पय' कविता में संत कबीर जी की विशेषताओं का विस्तार से वर्णन किया कवि नाभादास जी कहते हैं कि कबीर का व्यक्तित्व अक्खड़ था। उन्होंने भक्ति विमुख तथा कथित धर्मों की खूब धज्जी उड़ाई है। उन्होंने यह भी कहा है कि कबीर जी धर्म की स्पष्ट व्याख्या करते हैं। वे योग, यज्ञ, व्रत, दान और भजन के महत्व का सटीक वर्णन किया है। उन्होंने साखी, सबद और रमैनी में हिन्दू-तुर्क के बीच एकता का बीज बोया है।

कबीर पक्षपाती नहीं हैं। वे मुँह देखी बात भी नहीं करते हैं। उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था की कुरीतियों की ओर सबका ध्यान खींचा है। उन्होंने षट्दर्शन की दुर्बलताओं की पुरजोर आलोचना की है। उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कबीर का व्यक्तित्व प्रखर स्पष्टवादी एवं क्रान्तिकारी कवि का है। इन्होंने अपने काव्य सृजन कर्म द्वारा सामाजिक बुराईयों को दूर करने और समन्वय संस्कृति की रक्षा करने में महती भूमिका निभायी है।

प्रश्न - 'मुख देखी नाहिन भनी' का क्या अर्थ है?

उत्तर :- प्रस्तुत पद्यांश में कबीर के अक्खड़ व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। कबीर ऐसे प्रखर चेतना सम्पन्न कवि हैं जिन्होंने कभी भी मुँह देखी बात नहीं की है। उन्हें सच को सच कहने में तनिक भी संकोच नहीं था। राज सत्ता हो समाज की जनता, पंडित हो या मुल्ला-मौलवी सबकी बखिया उधेड़ने में उन्होंने तनिक भी कोताही नहीं की। उन्होंने इसीलिए अपनी अक्खड़ता, स्पष्टवादिता, पक्षपात-रहित कथन द्वारा लोक मंगल के लिए अथक संघर्ष किया।

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

निबंध माला – गद्य खण्ड

शीर्षक – कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता

लेखक – आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

डॉ० देव पूजन प्रसाद
एस० प्रो० हिन्दी
रा० सं० महा० वि०
15/06/2021

लघु प्रश्नोत्तर –

उर्मिला के चरित्र के सम्बन्ध में लेखक का क्या कहना है?

निबंधकार आचार्य महावीर प्रसाद का कहना है कि उर्मिला का चरित्र कोई साधारण चरित्र नहीं था उन्होंने यहाँ तक कहा है कि उर्मिला का चरित्र कीट-पतंगों का चरित्र नहीं था। वह इतना नगण्य नहीं था कि कवियों का ध्यान उधर नहीं जाता। वह धरती से भी भारी और हिमालय से भी ऊँचा था, किन्तु यह आश्चर्यजनक है कि राम और सीता का आख्यान लिखने वाले वाल्मीकि, भवभूति और तुलसी जैसे कवियों ने उर्मिला को पर्दे में ही छोड़ दिया। यह उनकी उच्छृंखलता ही थी।

महर्षि वाल्मीकि के विचारों के प्रति लेखक का क्या मत है?

निबंधकार द्विवेदी जी कहना है कि महर्षि वाल्मीकि जी ने उर्मिला की उपेक्षाकर अच्छा नहीं किया, क्योंकि उस नववधु का त्याग-तप अनूठा था। वाल्मीकि ने जनकपुर में केवल एक बार वधू वेश में उर्मिला को दिखाया फिर चुप हो गये। उन्हें वह न तो लक्ष्मण के वन प्रयाण के समय दिखाई पड़ी, न राम की राजगद्दी के उल्लासपूर्ण वातावरण में। वह उन्हें तब भी दिखाई नहीं पड़ी जब उसके पति उसकी बहन और उसके प्राणों से प्रिय पति के अग्रज रामचन्द्र जी वन जाने लगे। वह किस तरह छिन्न मूल लता की तरह भूमि पर लोटकर बिलख रही थी. वाल्मीकि को यह भी दिखाई नहीं पड़ा। आचार्य द्विवेदी ने लिखा है कि जिस दिन राम और लक्ष्मण सीता जी के साथ अपने राज को छोड़कर वन जा रहे थे उस दिन भी वाल्मीकि को उर्मिला की याद नहीं आयी। उसकी क्या दशा थी, सो कुछ भी आपने नहीं सोचा। इतनी उपेक्षा क्यों।

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

जयद्रथ-वध

Date: डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
सं०उ० सं०महावि० सुलतानपुर
15/06/21

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

" हे हे परन्तप! ताप सहकर चित्त में धीरज धरो,
हे धीर भारत! हो न आरत! शोक को कुछ कम करो।
पड़ता समय है वीर पर ही, भीरु-कायर पर नहीं,
दृढ़-भाव अपना विपद में भी भूलते बुधवर नहीं।

भावार्थ

वीर अभिमन्यु की मृत्यु के दुःख से दुखी अर्जुन को देखकर भगवान श्रीकृष्ण दुःखी हो जाते हैं और वे फिर पाण्डवों को सांत्वना देते हुए कहते हैं कि तुम लोग अपने मन में धैर्य धारण करके इस दुःख को सहन करो। इस संसार में अधिक दुःखी न हो। हे धैर्यवान अपने दुःख को कुछ कम करने का प्रयत्न करो। इस जगत में वीरों पर ही कठिन समय पड़ता है। डरपोक और कायरों के सामने ऐसी स्थिति कभी नहीं आती। वीर ही सदैव खतरों को चुनौती दिया करते हैं। कायर और डरपोक नहीं। अतः तुम को अपना दृढ़ भाव ही प्रत्येक परिस्थिति में प्रकट करना चाहिए। क्योंकि वीर कठिन समय में भी इसे नहीं भूलते हैं।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि का कहने का भाव यह है कि वीर पुरुष जो सदैव प्राण हथेली पर रखे हुए काम किया करते हैं उनके सामने ही ऐसी स्थिति आ सकती है। जो किसी प्रकार के खतरा उठाने के लिए तैयार ही नहीं होते उनके समक्ष ऐसी स्थिति आती ही नहीं है।